देश का ख़तरनाक रुख़

और

विद्वत समाज की ज़िम्मेदारी

द्वारा

मौलाना अबुल हसन अली नदवी

पयामे इन्सानियत फ़ोरम

पोस्ट बाक्स ६३, लखनऊ-७

www.abulhasanalinadwi.org

देश का ख़तरनाक रुख़

और

विद्वत समाज की ज़िम्मेदारी

द्वारा

मौलाना अबुल हसन अली नदवी

पयामे इन्सानियत फ़ोरम
पोस्ट बाक्स ९३, लखनऊ–७

www.abulhasanalinadwi.org

दो शब्द

"मानवता का संदेश अभियान" के संस्थापक, मौलाना अबुल हसन अली नदवी ने अप्रैल १९८३ ई० में अपने कुछ साथियों के साथ उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों का भ्रमण किया। इस दौरे का उद्देश्य लोगों के दिलों में प्रेम और भाई-चारे की ज्योति जगाना और देश में व्याप्त बिगाड़ के प्रति जिम्मेदारी की भावना जागृत करना था। इस दौरे के अन्त में मौलाना की एक तकरीर अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी के कैनेडी आडीटोरियम में आयोजित की गई।

देश की वर्तमान परिस्थितियों विशेषकर नैतिक पतन के परिप्रेक्ष में इस व्याख्यान की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए इसे एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है हिन्दी भाषा भाषी भाई बहनों और नवयुवकों के लिए यह प्रकाशन लाभप्रद सिद्ध होगा औ इसे पढ़कर वे देश निर्माण में अपनी भूमिका अधिक सार्थक ढंग से अदा कर सकेंगे।

अनुवाद की भाषा को सरल तथा सुबोध रखने का प्रयास किया गया है और यथा सम्भव वक्ता के मूल शब्दों को बनाये रखा गया है।

आशा है भारतीय समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने में इस पुस्तिका का अध्ययन सहायक सिद्ध होगा। ईश्वर हमारी मदद करे।

रायबरेली
अगस्त १२, १९८३ ई०
२·११·१४०३ हिज्री

अनुवादक

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम्

www.abulhasanalinadwi.org

अनुवाद : जो नस्लें तुमसे पहले गुज़र चुकी हैं उनमें ऐसे समझदार लोग क्यों न हुए जो ज़मीन पर बिगाड़ फैलने से रोकते ? हाँ, ऐसे थोड़े थे जिनको हमने बचा लिया और जो ज़ालिम थे वह ऐश व आराम के उन्हीं असबाब के च कर में पड़े रहे जो उनके लिए बनाये गये थे, और वह मुजरिम थे।

(सूरः हूद–११६)

सम्मानित शिक्षकगण एवं प्रिय छात्रों !

मैंने आपके सामने कुरआन शरीफ़ की एक आयत पढ़ी है। इस आयत में जो दर्द, जो उमग जो हकीकत और ताकत है, मैं इकरार करता हूं कि इसका अनुवाद नहीं कर सकता। मैं कुरआन मजीद का विद्यार्थी रहा हू और अरबी भाषा में भी शुद बुद रखता हूं लेकिन मैं स्वीकार करता हू कि कुरआन मजीद की इस आयत के अन्दर जो दर्द अगेजी (करुणा) है दूसरी भाषा में उसका अनुवाद करना बहुत कठिन है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुमसे पहले की नस्लों में ऐसी सूझ बूझ वाले क्यों नहीं रहे जिन्हें कुछ बचा खुचा एहसास था, कुछ उनके दिल में दर्द था। जमीन में जो फ़साद फैल रहा था जो तबाही मच रही थी उससे लोगों को मना करते। थोड़े से उन लोगों के अलावा जो इस काम के लिए खड़े हुए जिनको हमने बचा लिया था बाकी तमाम लोग समय के धारे में बह गये। और भोग विलास के जो साधन उपलब्ध थे और बिगड़ी हुई स्थिति से लाभ उठाने का जो सुनहरा अवसर प्राप्त था उससे फ़ायदा उठाने लगे। और बहती गंगा में हाथ धोते रहे। आप जानते हैं कि बिगड़ी हुई स्थिति से फ़ायदा उठाना अधिक आसान होता है। दूसरों का घर उजाड़ कर अपना घर बसाना और दूसरों की लाशों पर से गुजर कर अपने लक्ष्य की प्राप्ति आसान है।

सज्जनों ! मनुष्य के लिए बीमारी कोई अस्वाभाविक चीज नहीं। किसी का बीमार पड़ जाना मानव स्वभाव के विपरीत नहीं है बल्कि यह एक तरह से ज़िन्दगी की अलामत है। पत्थर ग़लती नहीं कर सकता, पेड़ ग़लती नहीं कर सकता। इन्सान ही ग़लती करता है। इसलिए ग़लती करना अधिक परेशानी की बात नहीं और इस पर निराश नहीं होना चाहिए। एक बड़े मानव समुदाय का किसी गलत रास्ते पर पड़ जाना अपनी तुच्छ इच्छाओं की पूर्ति के पीछे दीवाना हो जाना मानव इतिहास के लिए भी और स्वयं मानव के लिए भी कोई विशेष चिन्ता की बात नहीं है। चिन्ता की बात यह है कि बिगाड़ से निबटने, और बिगाड़ पैदा करने वाली शक्तियों से आँखें मिलाने वाले, अपनी सुख सुविधा को तज कर और अपनी इज्जत को खतरे में डालकर मैदान में उतरने वाले न मिलें, असल चिन्ता की बात यह है। इन्सान अनेक बार ऐसी बिगाड़ पैदा करने वाली ताकतों और साजिशों के शिकार हुए हैं और ऐसा प्रतीत होने लगा है कि इन्सानियत जल्द दम तोड़ देगी। लेकिन इतिहास साक्षी है कि ऐसे हर नाजुक अवसर पर ऐसे लोग मैदान में आ गये जिन्होंने डटकर हालात का मुकाबला किया और अपने जान की बाजी लगा दी। मानव सभ्यता का क्रम जो अभी तक जीर है, मात्र पीढ़ियों का क्रम नहीं बल्कि मानवीय गुणों के क्रम का नतीजा है जो हर युग में रहा है। मानवीय भावनायें, उच्च विचार, नैतिक शिक्षा तथा इनके फलने फूलने के लिए साहस और बलिदान की भावना जो इस समय तक चली आ रही है वास्तव में उन लोगों की मेहनत का नतीजा है जो बिगड़े हुए हालात से मैदान में आये और उन्होंने समय की चुनौती को कबूल किया और जमाने की कलाई मोड़ दी ऐसे लोगों की बदौलत मानवता जीवित है। हर युग के कवि, हर जमाने के साहित्यकार और प्रत्येक काल के सहृदय लोग समय के बिगाड़ की शिकायत करते चले आये हैं। लेकिन हम देखते है कि इसके बाद भी मानवीय गुण, मानवीय भावनायें और नेक इन्सान मौजूद रहे। यह

www.abulhasanalinadwi.org

वास्तव में उन लोगों के संघर्ष का प्रतिफल है जो उस समय अपने स्वार्थ को भूलकर मैदान में आये और अपने–अपने खानदान के लिए और अपनी आगे आने वाली पीढ़ी के लिए खतरा मोल लिया और जमाने का रुख मोड़ दिया। ऐसे लोगों के प्रयास और बलिदान के पानी से मानवता की खेती हरी हो गई।

वास्तव में मानवता की खेती हर जमाने में खाद चाहती है। जिस प्रकार फर्टीलाइजर्स भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाते हैं, पैदावार को ताकत देते हैं उसी प्रकार मानवता की खेती के लिए भी खाद की जरुरत होती है। मानवता की खेती के लिए यह खाद "व्यक्तिगत लाभ" है। 'स्वार्थ' और 'व्यक्तिगत लाभ' की यह खाद जब मानवता की खेती में पड़ती है तो इसकी खेती लहलहा उठती है। ज़मीन अपनी पैदावार बढ़ा देती है और मानवता की झोली भर जाती है और उसे जिन्दगी की एक नई किस्त प्राप्त हो जाती है, मनुष्य में जीवित रहने की क्षमता पैदा हो जाती है। साधनों की वृद्धि, विज्ञान और टेकनोलाजी का विकास, ज्ञान, साहित्य कोई चीज भी मानवता को जीवित रखने की जमानत नहीं दे सकती। उसे जीवित रखने के लिये बीर बाँकुरे, जाँबाज़ और सहृदय लोगों की जरूरत है जो चोट खाया दिल, आंसू भरी आंखे रखते हैं। और जो विषम परिस्थितियों का डट कर सामना करें, चोट को सहन करें और समय के धारे को बदलने के लिए जान की बाजी लगा दे। जब कभी इस तत्व का अभाव होता है तो पूरा समाज खतरे में पड़ जाता है। भले ही वह देखने में स्वस्थ दिखाई पड़े जैसे एक मोटा ताजा आदमी जिसके अन्दर बीसियों प्रकार की बीमारियाँ हों लेकिन उसका मोटापा सब पर पर्दा डाले रहता है और देखने वालों को धोखा होता है और लोग समझते हैं कि यह व्यक्ति बहुत तन्दुरुस्त है लेकिन वास्तव में वह बीमारियों का ढेर है। ऐसा ही समाज का मामला है। उस पर जो असम और अस्वाभाविक मोटापा नज़र आता है उसके

चेहरे पर खून छलकता हुआ नजर आता है, लेकिन वास्तविकता कुछ और होती है। अकबाल के शब्दों में—

कुछ और चीज है कहते हैं जान पाक जिसे
यह आब व रंग फक़त आब व नाँ की है बेशी

अर्थात् पानी व रोटी की मात्रा शरीर में अधिक हो गई तो चेहरे पर ताजगी नजर आती है लेकिन यह जान पाक नहीं है। जान पाक तो कुछ और ही चीज है। समाज की पवित्र आत्मा उसके अन्दर त्याग की भावना है उसकी सहिष्णुता है और यह कि उसके लोग किस प्रकार अरुचि कर बातों को सहन करते हैं। और कितने कणुवे घूंट पी जाते हैं। कितने दुख सहन कर जाते हैं। और बहुत जल्द आपे से बाहर नहीं होते और यह कि समाज में नेक इंसान की कितनी कदर पाई जाती है। शराफत की कितनी कदर है उसे लोग किस नजर से देखते हैं। एहसान को वह समाज कितना मानता है और अत्याचार से उसे कितनी नफरत है ?

किसी समाज के लिए सबसे बड़ा खतरा यह है कि उसके अन्दर ज़ुल्म का मिज़ाज पैदा हो जाये और इससे अधिक खतरनाक बात यह है कि इस अत्याचार की प्रवृति को नापसन्द करने वाले उस समाज में बहुत ही कम या नहीं के बराबर हों। और ढूंढने से भी न मिलें। पूरे समाज में गिने चुने लोग भी ऐसे न हों जो इस अत्याचार और अनाचार को नापसन्द करते हों। और अपनी नापसन्दीदगी का एलान करते हों। घर बैठकर नापसन्द करने वाले तो मिल जायेंगे जो चार छः लोगों की मौजूदगी में कह दें कि यह ठीक नहीं हो रहा है। किन्तु अपनी नापसन्दीदगी का एलान करते हुए मैदान मे उतरने वाले कुछ भी न हों। ऐसे लोगों की जब किसी समाज में कमी होती है तो उस समाज को कोई ताकत नहीं बचा सकती है। जब किसी समाज में ज़ुल्म फैलने लगा हो और पसन्दीदा निगाहों से देखा जाने लगा हो जब अत्याचार का माप दण्ड यह बन गया हो कि जालिम कौन है ? उसकी क़ौमियत क्या है ? वह

www.abulhasanalinadwi.org

किस वर्ग का है ? उसकी भाषा क्या है ? किस बिरादरी का है ? तो मानवता के लिए एक बड़ा खतरा पैदा हो जाता है। जब मानवता को इस तरह के खानों में बाँटा जाने लगे और जालिम की भी कौमियत देखी जाने लगे, जब उसका मजहब पूछा जाने लगे। जब आदमी अखबार में किसी फ़साद या किसी जुल्म या ज्यादती की खबर देखे तो पहले उसकी निगाहे यह तलाश करें कि किस सम्प्रदाय की तरफ से यह बात शुरू हुई इसमें नुकसान किसको पहुंचा ? जब जुल्म को नापने और जालिम होने का फैसला करने का यह मापदण्ड बन जाता है कि वह किस कौम, सम्प्रदाय और बिरादरी का है तो उस वक्त समाज को कोई ताकत की जेहानत, कोई सरमाया और बड़े-बड़े मँसूबे (योजनायें) बचा नहीं सकते।

इस्लाम से पहले अरबों का एक नियम और कथन था कि "अपने भाई की मदद करो, चाहे जालिम हो चाहे मजलूम"। और इस्लाम से पहले का अरब इसी उसूल पर चल रहा था। यह एक नीति निर्धारक सिद्धान्त था और इसने मजहबी तालीम की हैसियत अख्तेयार कर ली थी और यह बात ऐसी मशहूर थी कि किसी के सोचने और गौर करने की जरूरत ही नहीं थी। एक बार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा (हजरत मोहम्मद स० के साथी) की सभा में कहा कि "अपने भाई की मदद करो, चाहे जालिम हो चाहे मजलूम हो"। अरबों के लिए यह ऐसी जानी बूझी हकीकत थी कि इस पर सबको शान्त रह जाना चाहिए था। किन्तु अल्लाह के रसूल स० ने सहाबा की जो जेहन बनाया था वह जेहन (प्रवृत्ति) उसको हजम नहीं कर सका। उन्होंने प्रार्थना की: –

अनुवाद : "हम मजलूम की मदद तो करें, लेकिन जालिम (अत्याचारी) की मदद कैसे करें ?"

समाज की सबसे मजबूत बुनियाद ऐसी शिक्षा-दीक्षा है जिसे प्राप्त

करने के बाद अन्त:करण इस पर जाग जाये, चौकन्ना हो जाये और पूछने लगे कि यह कैसे हो सकता है कि समाज में अत्याचार होता रहे, बढ़ता और पनपता रहे और हम खामोश देखते रहें।

यह नैतिक शिक्षा और उसकी सफलता का अन्तिम नमूना है। दुनिया के इतिहास में ऐसी दीक्षा (तरबियत) की मिसाल मिलना कठिन है कि एक तरफ सहाबा आज्ञा पालन के अद्वितीय नमूना थे, वह अल्लाह के रसूल स० पर जान निछावर करते थे और यह नहीं पूछते थे कि हमारा अंजाम क्या होगा ? शलभ दीप शिखा पर गिरते हैं और जान देते हैं और अंजाम नहीं सोचते। रसूल के कहने के बाद सहाबा पुन: विचार करने की भी जरूरत नहीं समझते थे। किन्तु अब उनके अन्दर ऐसा परिवर्तन आ चुका था, समाज को ऐसी ठोस बुनियाद पर उठाया गया था कि जब आपने फरमाया कि अपने भाई की मदद करो चाहे जालिम हो चाहे मजलूम (उत्पीड़ित) तो सहाबा तड़प उठे और श्रद्धा पूर्वक विनती की कि ऐ अल्लाह के रसूल ! आपने अब तक हमें यह शिक्षा दी है कि हम मजलूम की मदद करें और जालिम का साथ न दें ! क्या हमें धोखा हो रहा है, शायद हमारे कानों ने इसे सही सुना न हो। आप हमें बतायें कि जालिम की मदद कैसे की जाये ? आपने फरमाया 'हाँ', जालिम की भी मदद होती है। मजलूम की मदद यह है कि उस पर अत्याचार न होने दो; जालिम की मदद यह है कि उसका हाथ पकड़ लो, उसको जुल्म करने न दो"।

यह वह चीज जो मानव समाज को बचाने वाली है कि निष्पक्ष भाव से बिना जाति, धर्म, सम्प्रदाय और बिरादरी का कुछ ख्याल किये हुए जालिम और मजलूम को इंगित किया जाये। जालिम कोई भी हो उसको जुल्म से रोका जाये। यदि समाज में यह नैतिक बल और निष्पक्ष भाव तथा निष्ठा की भावना पैदा हो जाये तो समाज बच सकता है और अगर यह नहीं है तो दुनिया की कोई भी ताकत इस समाज को

www.abulhasanalinadwi.org

नहीं बना सकती आज हिन्दुस्तान में कभी इसी चीज की नजर आती है जिसके कारण समाज को खतरा पैदा हो गया है।

जब किसी पीढ़ी पर, किसी युग में नैतिक पतन का ऐसा दौरा पड़ता है अथवा वह किसी इन्सानी साजिश य किसी फूट डालने वाली ताकत का शिकार होती है उस समय दो वर्ग मैदान में आते हैं-एक बुद्धजीवियों का वर्ग और दूसरा धार्मिक लोगों का वर्ग। यह दो वर्ग हैं जिनमें बिगाड़ (भ्रष्टाचार) सबसे अन्त में दाखिल होता है। इतिहास हमें बताता है कि बिगाड़ सबसे अन्त में जिस वर्ग में दाखिल होता है वह मजहबी तबका है उसके बाद बुद्धजीवियों का वर्ग है। लेकिन जब इन दो वर्गों में भी बिगाड़ आ जाये तो फिर ऐसे समाज को कोई चीज बचा नहीं सकती।

समय की माँग है कि बुद्धजीवी और मजहबी लोग मैदान में आयें, हमारी यूनिवर्सिटियों से लोग निकलें और समाज को बचाने की कोशिश करें। मुझे डर मालूम होता है कि भविष्य में इतिहासकार जब इस समाज का इतिहास लिखेगा जिसमें हम और आप सांस ले रहे हैं तो कहीं यह न लिखे कि यह दुर्घटना उस समय घटित हुई जब देश में मुस्लिम यूनीवर्सिटी मौजूद थी, दारुल उलूम देवबन्द मौजूद था, नदवतुल उलमा मौजूद था और जामेआ मिलिया मौजूद थी। उनकी मौजूदगी बल्कि उनकी दीवार के नीचे और उनके साये में सब कुछ हो रहा था। इस समय जरूरत यह है कि आप मैदान में आयें और भ्रष्टाचार का, बेउसूली का, बेईमानी का, रिश्वतखोरी का और जमाखोरी व चोरबाजारी का, भाई भतीजावाद का, और सबसे बढ़कर रक्तपात और पशुता का जो धारा बह रहा है और देश तबाही की जिस दिशा में जा रहा है उसका रास्ता रोक कर खड़े हो जायें।

ऐसे वीर बाँकुरों के लिए पहली शर्त तो यह है कि उनके अन्दर नैतिक साहस हो और वह निःस्वार्थ हों। वह इस समाज को देने के लिए

आयें लेने के लिए न आयें, इस बिगड़ी हुई व्यवस्था से लाभ उठाने के लिए न आयें। उन लोगों की जो ऐसे संकमण काल (CISIS) में मैदान में आते हैं और पूरे समाज को मौत के मुंह से निकाल लाते हैं उनकी विशेषता यह है कि वह साकी की फितरत और मिजाज रखते हैं साकी सबको पिलाता है और स्वयं नहीं पीता। यह कठिन स्थल है और दिल पर पत्थर रखे बिना तय नहीं हो सकता। लेकिन ऐसा किये बिना काम भी नहीं चलता। मैं अपने प्रिय छात्रों से कहना चाहता हूं कि आज हिन्दुस्तान में इज्जत का मकान जभी हासिल होगा जब आप इस देश को बचाने की सच्चे दिल से, जान हथेली पर लेकर निःस्वार्थ भाव के साथ और अन्त में कहता हूं कि जुनून के साथ कोशिश करेंगे। किसी कौम अथवा वर्ग को सम्मान उसी समय मिलता है जब वह परोपकार करे और स्वयं लाभ न उठायें, जब वह अपना दामन झाड़ दे और दूसरों की झोली भर दें। वह अपने घर में अंधेरा पसन्द करे और दूसरों के घर में चिराग जलाये, जब वह अबूतल्हा अन्सारी की तरह अपने बच्चों को भूखा सुलाये और मेहमान को पेट भर कर खिलाये। आप इतिहास पढ़ें तो आपको अनेक उदाहरण मिलेंगे और सीख का बड़ा सामान मिलेगा किन्तु खेद है कि ऐतिहासिक घटनाओं की तह में जो तत्व काम करते हैं और जो समय के धारे को बदल देते हैं, हमारे इतिहासकारों की निगाह वहाँ तक नहीं जाती। वह अधिकतर यही लिखते हैं कि अमुक बादशाह आया और अमुक बादशाह गया। अमुक ने अमुक देश पर हमला किया और विजय प्राप्त की और अमुक की पराजय हुई। लेकिन इसके पीछे क्या ताकतें काम कर रही थीं? इसके वास्तविक कारण क्या थे? फिर कारण के पीछे कारण होते हैं। जैसे मौलाना रूम कहते हैं कि गर्मी का जमाना है और एक व्यक्ति पंखा झल रहा है तो संकुचित दृष्टिकोण वाला यह कहेगा कि यह हवा उस पंखे के कारण आ रही है लेकिन जिसकी नजर और गहरी होगी वह कहेगा नहीं, असल में इस हाथ का कारनामा है जो इसको हुला रहा है, पंखा जमीन पर रख दो

www.abulhasanalinadwi.org

तो हवा नहीं आयेगी। इससे भी गहरी नजर जिसकी होगी वह कहेगा कि नहीं यह हाथ भी नहीं बल्कि इन्सान का इरादा है उसकी निष्ठा और सेवा की भावना इस का स्रोत है। अगर किसी की नजर और गहरी है तो वह कहेगा नहीं यह न पंखे का कारनामा है न हाथ का। असल चीज हवा है लेकिन इससे भी आगे नजर रखने वाला कहेगा कि इस हवा का जो सृष्टा है जो इसे चलने की ताकत देता है वह वास्तविक दाता है। इतिहास का मामला भी यही है कि घटनाओं के पीछे कारण होते हैं और इनके पीछे दूसरे कारण होते हैं और यह आपस में सम्बद्ध होते हैं। आप जो यह देखते हैं कि दुनिया में कोई सुधार पैदा हुआ और कोई समाज मौत और जिन्दगी की खींच तान से ग्रसित होने के बाद अचानक ताजा दम होकर उठा और उसने फिर जीवन की यात्रा प्रारम्भ की और उसकी क्षमतायें उजागर हुई उसके पीछे किसी ऐसे वर्ग कुछ ऐसे व्यक्तियों का हाथ होता है जो अपनी जान को खतरे में डालकर अपने स्वार्थ से आंखें बंद कर लेते हैं।

किसी ऐसे देश में जैसे कि हिन्दुस्तान है जो विभिन्न सभ्यता और संस्कृति का देश है और यहाँ का अपना एक इतिहास है। यहाँ कुछ गलत फहमियां और मन मुटाव रहा है। कुछ राजनीतिक खींचतान रही है, वहां वर्तमान परिस्थितियों में कम से कम मुसलमानों के लिए कोई रास्ता इसके सिवाय इज्जत हासिल करने का नहीं है कि वह इस देश को नैतिक नेतृत्व प्रदान करें और इस देश को बचाने की निष्ठा पूर्वक कोशिश करें। वह साबित कर दें कि देश को बचाने के लिए अपने को खतरे में डाल सकते हैं। और इस देश को बचाने में उनके गिरोह और मजहब की कोई गरज या कोई व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं है। वह अपने प्रयासों का बदल सिर्फ अल्लाह से चाहते हैं। वह इस अकीदा और भावना के साथ मैदान में आते हैं कि यह मुल्क अमानत है इस देश के बासी खुदा के पैदा किये हुए इन्सान हैं उनके साथ हमें रहना है। अगर यह न होंगे तो हम भी न होंगे।

इस समय हिन्दुस्तान में यह मोड़ आ गया है कि पढ़े लिखों का समुदाय, बुद्ध जीवी वर्ग हमारे विद्या केन्द्रों के विद्वान मैदान में आयें। इस समय मैदान बुद्धजीवियों का है, मजहबी आदमियों और ऐसे बेलाग इन्सानों का है जो राजनीतिक पार्टियों और राजनीतिक लाभ से बिल्कुल आंखें बन्द कर लें। इस से कोई मतलब न रखें कि ऐसा करने से हमारी पार्टी पावर में आयेगी और हमारी सरकार बनेगी। ऐसे उदाहरण भी इतिहास में मिलते हैं कि जब इनाम मिलने का अवसर आया और जब हुकूमत थाली में रख कर पेश की जाने लगी तो अल्लाह के बन्दों (भक्तों) ने कहा कि हमने इसलिये काम नहीं किया था हमने तो हमदर्दी में किया था, निष्ठा के साथ किया था खुदा की खुशनूदी के लिए किया था, हमें इसका इनाम नहीं लेना है।

सज्जनों! यह हकीकत है जिसे हमारे नवजवानों को खास तौर पर समझ लेना चाहिए कि यह बड़ा कीमती समय है ऐसे अवसर देशों के इतिहास में, कौमों के इतिहास में कभी शताब्दियों के बाद आते हैं। यह एक सुनहरा अवसर खुदा की तरफ से हमको और आपको दिखाया गया है। खुदा का एहसान (उपकार) है कि उसने आपको इस युग में पैदा किया। लोग तो हमदर्दी करेंगे कहेंगे हम काश ऐसे युग में न पैदा हुए होते। लेकिन बीर बांकुरों और साहसी लोगों के सोचने का तरीका यह नहीं। मैं आपको बधाई देता हूं यहां के मुसलमानों को बधाई देता हूं, मैं यहां के सभी मानवता के प्रेमी वर्ग को बधाई देता हूं कि खुदा ने उनको एक ऐसे युग में पैदा किया और एक ऐसा अवसर दिया जिसे हमारे पूर्वज बड़ी बड़ी तपस्या से प्राप्त नहीं कर सकते थे, वह रात-रात भर जाग कर नहीं हासिल कर सकते थे वह दिन दिन भर रोजा रख कर नहीं हासिल कर सकते थे आज वह अवसर हमको प्राप्त है कि हम आज मानवता की निःस्वार्थ सेवा करके और देश को बचाने के लिये जान लड़ाकर, इस देश को खतरे की कगार से, अजगर के मुंह से निकाल सकते हैं।

www.abulhasanalinadwi.org

मैं बिना किसी क्षमा याचना के साफ कहता हूं कि मैंने इतिहास का अध्ययन किया है, मैं नहीं समझता कि हमारा हिन्दुस्तानी समाज कभी ऐसे खतरे से दो चार हुआ हो जैसा कि इस युग में इस तीस पैंतीस साल के अन्दर हुआ है। हिन्दुस्तान का शरीर बार बार कमजोर हुआ हिन्दुस्तान की पराजय हुई, उस पर ब्रिटेन की विदेशी हुकूमत रही। यह सब ऐतिहासिक घटनायें हैं। लेकिन हिन्दुस्तान की आत्मा इस तरह से कमजोर नहीं हुई थी कि उसने अपना काम छोड़ दिया हो। हिन्दुस्तान के इतिहास में कभी ऐसा दौर नहीं आया कि बुराई और जुल्म को इस आसानी के साथ सहन कर लिया गया हो जिस आसानी के साथ आज गवारा किया जा रहा है बल्कि इस को फलस्फा बनाया जा रहा है इसके द्वारा पार्टियों को मजबूत और संगठित किया जा रहा है। हिन्दुस्तान सैकड़ों मुसीबतों का शिकार हुआ लेकिन उसके इन्सानों का अन्तः करण जिन्दा रहा, उसने अपना काम करना कभी नहीं छोड़ा। इस समय जो असल खतरा है वह यह कि हिन्दुस्तान का अन्तः करण कहीं मर न गया हो.—

मुझे यह डर है दिले जिन्दा तू न मर जाये,
कि जिन्दगी ही इबारत है तेरे जीने से।

इस से बढ़कर कोई खतरे की बात और क्या हो सकती है कि इतने बड़े मुल्क में किसी सहृदय व्यक्ति की कराह सुनने में नहीं आती कि तड़प कर किसी ने फरियाद की हो और सब कुछ तज कर मैदान में आ गया हो। लीडर अपनी जगह पर, राजनीतिक पार्टियां अपनी जगह पर संस्थायें अपनी जगह पर, पुस्तकालय अपनी जगह पर, वक्ता अपनी जगह पर, बुद्धजीवी अपनी जगह पर लेकिन वह अन्तः करण कहां है जो समाज के इस पतन पर, इंसानियत की इस बस्ती पर खून के आंसू रोये? मानवता की रक्षा इसी अन्तः करण ने की है, तीर तलवार ने नहीं की सेना ने नहीं की है, शाही खजानों और दौलत की बहुतात ने नहीं की है, ज्ञान के विकास ने नहीं की है टेक्नोलाजी और साइंस ने नहीं की है बल्कि मानव का अन्तः करण है जो सब पर गालिब आया, सर्वोपरि

रहा। जहां साधन नहीं थे उसने वहां साधन पैदा कर लिए। आप देखिये जब किसी के दिल पर चोट लगती है और जब कोई बे चैन होता है तो सब कुछ कर लेता है। एक आदमी के पास साधनों का ढेर है लेकिन उसके दिल में दर्द नहीं है और कुछ करने का इरादा ही नहीं है तो समय निकल जाता है और वह कुछ नहीं कर पाता मुझे यह खतरा है कि हिन्दुस्तानी समाज का अंतः करण सुन्न का शिकार हो गया है उसने अपना काम करना छोड़ दिया है। यह खतरे की बात है इसलिए कि मानवता की आस इसी अन्तःकरण से है। इस दुनिया में जो कुछ भलाई की उम्मीद है वह इसी अन्तःकरण से है। जब यह अन्तःकरण जागृत होता है उसको खुदा की तरफ से रोशनी मिलती है। पैगम्बरों की तरफ से इसको भोजन मिलता है और यह दौलत परस्ती का शिकार नहीं होता, शक्ति पूजा का शिकार नहीं होता तो फिर यह अन्त.करण वह काम करता है जो बड़ी बड़ी सलतनतों और बड़ी बड़ी फौजों से नहीं हो सका देखिये कुछ जिन्दा जमीरों (जागृत अन्तःकरण) ने कुछ सहृदय आत्माओं ने अपने अपने समय में क्या काम कर लिया। हमारे ऋषि मुनि क्या रखते थे, उनके पास कौन सी पूंजी थी, किन्तु उन्होंने एक नये समाज का निर्माण किया, उनके प्रयास से एक नया युग प्रारम्भ हो गया।

आज हमें जिस चीज की शिकायत है वह यह कि हर तरह की आवाजें सुनने में आती हैं हर तरह के घोषणा पत्र सामने आते हैं लेकिन मानवता के पतन और इन्सानी जान व माल तथा मानव अधिकारों के हनन पर कोई रोने वाली आंख और कोई दर्द महसूस करने वाला दिल नजर नहीं आता। हम समझते हैं कि ऐसी संस्थाओं में जहां सब कुछ सिखाया पढ़ाया जाता है वहीं ऐसे लोग मिलने चाहिए, वहीं ऐसे लोगों को ढूंढना चाहिए। कुछ एक नवजवान ही सही जो अपने भविष्य की ओर से आंखें बन्द कर लें जैसे कि एक पैगम्बर ने इसी तरह के एक बिगड़े हुए समाज में सुधार का काम शुरू किया तो उनकी कौम ने ताना

www.abulhasanalinadwi.org

दिया था। उन्होंने कहा, "ऐ सालेह अ० ! तुमसे तो बड़ी बड़ी आशायें जुड़ी थीं तुम तो बड़ी तरक्की करने वाले आदमी थे। तुमसे तो आशा थी कि तुम अपने घर को खुशहाल बनाओगे, तुम अपनी कौम का नाम रौशन करोगे, अपने वतन का नाम रौशन करोगे। यह तुम क्या ले बैठे ? तुमने यह झगड़ा कहाँ शुरू कर दिया ?" कौम के नजदीक यह झगड़ा था। किन्तु मानवता के डूबते बेड़े को हमेशा उन्हीं लोगों ने बचाया है जिन्होंने अपने स्वार्थ को नहीं देखा, समाज के लाभ को देखा। लेकिन जिस कौम में नाम लेने के लिए भी ऐसे कुछ एक आदमी न पाये जायें जो किसी बड़े से बड़े पद को अपने लक्ष्य के रास्ते में खातिर में न लायें तो ऐसी कौम के बारे में कोई बड़ी आशा नहीं की जा सकती और इसका कोई वजन नहीं। ऐसे साहसी वीर बाँकुरे कम से कम मुसलमानों में हर युग में पाये गये हैं जिन्होंने सलतनतों और बादशाहों को मुंह नहीं लगाया आज फिर उनकी जरूरत है, किसी संख्या में सही, लेकिन ऐसे लोग होने चाहिए।

आज मुसीबत यह आ गई है कि बार बार के अनुभवों से अनुभवी लोगों ने यह समझ लिया है कि इस समाज में हर व्यक्ति की एक कीमत है अगर वह इतने दाम में नहीं बिक सकेगा तो इतने दाम में जरूर बिक जायेगा। लेकिन ईश्वर के कुछ भक्त हमेशा रहे और रहने चाहिए जो किसी दाम में भी न बिक सकें। बड़े से बड़ा सुनहरा जाल आप उनके सामने डालकर देखिए। अगर वह यह सोच भी लें कि सम्मान स्वीकार कर लूं तो उनकी रातों की नींद हराम हो जाये। ईश्वर की कृपा से अभी ऐसे लोग इस दुनिया में मौजूद हैं। अभी हमारी पीढ़ी में भी ऐसे लोग हैं कि बड़े से बड़े पद की लालच उन्हें अपने रास्ते से विचलित नहीं कर सकती इसलिए हर व्यक्ति के बारे में यह सोचना कि यह किसी न किसी कीमत में बिक जायेगा अपने को धोखा देना है। यह शिकार भी जाल में फंस जायेगा यह सोचना गलत है। ऐसे लोग मानवता की लाज

हैं, मैं आपसे यह नहीं कहता कि आप ऐसे लोगों की तलाश करें। मैं कहता हूं आप स्वयं ऐसा बनें। फिर आप जिसके पास से गुजर जायेंगे उसे इज्जत मिलेगी, ताकत मिलेगी, विश्वास और ईमान मिलेगा।

आज हमारे देश और हमारे दम तोड़ रहे समाज के लिए बड़े बड़े विद्वानों की ऐसी जरूरत नहीं जितनी सही और दिलेर इंसानों की। त्याग के लिए तैयार होने वाले इंसानों की जरूरत है। और मैं समझता हूं यह विश्वविद्यालय जिसने कभी इस देश को मोहम्मद अली जौहर जैसा सपूत दिया है जिन्होंने इस देश में सही ढँग पर इस देश में लोकतंत्र की शुरुआत की। यहाँ अवामी सियासत वास्तव में मौलाना मोहम्मद अली ने शुरु की, वही गांधी जी को मैदान में लाये। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है। उनसे पहले राजनीति बुद्धजीवियों तथा संविधान की समझ रखने वालों में थी। बुद्धजीवियों का एक बहुत ऊँचा समुदाय था जो राजनीतिक बातें करता था। बाजार में राजनीति को लाने वाले, पार्कों और पब्लिक में राजनीति को लाने वाले मोहम्मद अली और शौकत अली हैं। वह आपकी इसी यूनिवर्सिटी के सपूत थे जिन्होंने इस देश में कौमी बेदानी गैरत की आग लगा दी और जिन्होंने "खिलाफत तहरीक" शुरू की। और फिर आजादी की लड़ाई में हरावल दस्ता बल्कि सेना नायक का रोल अदा किया। आज फिर हिन्दुस्तानी समाज की मांग है, उसने अपना दामन फैला रखा है। मैं उसकी तरफ से वकालत कर रहा हूं कि हमारा समाज फिर आज आपसे वक्त का सिपाही चाहता है हर वक्त का एक सिपाही होता है, इस समय की एक दावत (आह्वान) होती है, हर समय की एक जरूरत होती है। जब जरूरत थी आजादी की लड़ाई के सूरमाओं की तो उस समय अली बिरादरान मैदान में आये। आज देश को नैतिक पतन से बचाने वालों की जरूरत है, आज इस देश में त्याग और तपस्या का एक आदर्श नमूना कायम करने वालों की

www.abulhasanalinadwi.org

जरूरत है। आज इस देश में "असहावे कहफ़" १ (गुफ़ा वाले) जैसे नवजवानों की जरूरत है जिनके बारे में कुरआन कहता है:—

अनुवाद : कह चन्द नवजवान थे कि अपने परवर दिगार पर ईमान लाये थे, हमने उन्हें हिदायत में और ज्यादा मजबूत कर दिया और उनके दिलों की (सब्र से, बंदिश कर दी, वह जब (राहे सक़–सद्मार्ग) में खड़े हुए तो उन्होंने साफ़ साफ़) कह दिया हमारा पालनहार तो वही है जो आसमान व जमीन का परवर दिगार है। हम उसके सिवा किसी और माबूद को पुकारने वाले नहीं अगर हम ऐसा करें तो यह बड़ी ही बेजा बात होगी। (सूरःकहफ़–१३, १४)

आज हमारे समाज को ऐसे नवजवानों की जरूरत है जो मैदान में आयें और देश को नैतिक पतन से बचायें। नैतिक पतन अपनी चरम सीमा तक पहुंच गया है। एक आदमी किसी दुर्घटना का शिकार हो जाये तो उसके आस पास कुहराम मच जाये, लोग जमा हो जायें, मातायें अपने घरों से निकल आयें, बच्चों को छोड़ दें। कोई पानी लेकर आये, कोई दवा लेकर आये कि हमारे भाई मालूम नहीं कहां जा रहे थे दुर्घटना ग्रस्त हो गये। लेकिन इस देश के नैतिक पतन का यह हाल है कि उस वक्त लोग उन मरे हुए, कुचले हुए इंसानों के हाथ से घड़ियां निकाल लेते हैं और उनके पर्स की तलाशी लेते हैं। उस समय बजाय इसके कि उनके सूखे होठों में पानी की एक बूंद डालें, वह ज़ालिम उनकी कीमती चीजें लूटने में लग जाते हैं। आप यह बातें इतिहास में पढ़ते तो विश्वास न करते। और दूसरे देश के लोग विश्वास नहीं करेंगे। रेलों में अनेक बार ऐसी दुर्घटनायें घटित होती हैं और निकट के देहातों की आबादी

१. कुरआन शरीफ़ की अट्ठारवी सूरः में, जिसका नाम सूरः कहफ़ है, गुफ़ा वाले कुछ नवजवानों की घटना बयान की गयी है। संकेत उन्हीं लोगों की ओर है। (अनुवादक)

देखती है कि एक आदमी दबा हुआ है, दो लकड़ियों के बीच में उसका बदन आ गया है। वह कहता है कि मेरा सब कुछ ले लेना किसी तरह मुझे इस शिकंजे से निकाल दो तो उन्होंने उसके हाथ से घड़ी छीन ली और उसकी जेब से रुपये निकाल लिए। और उसे मरता हुआ छोड़कर चले गये। जिस समाज का दिल ऐसा पत्थर हो जाये उस समाज को देखकर भला दिल खुश हो सकता है। क्या उससे आशा की जा सकती है कि वह समाज दुनिया में बाकी रहेगा और नेतृत्व का कोई बड़ा रोल अदा करेगा ?

खुदा को इंसान की जो चीज़ सब से अधिक नापसंद है, जिस पर उसकी गैरत को जोश आता है वह जुल्म है। वह सब कुछ क्षमा कर सकता है, अकायद की हद तक कुरआन एलान करता है कि शिर्क (खुदा की जात में किसी को शरीक करना) माफ नहीं करेगा। किंतु जहां तक इंसानों की किस्मत का संबंध है, सलतनत, समाज और सभ्यता के लिए जुल्म मौत का पैगाम है। अत्याचार के बाद इन को ढील नहीं दी जाती तो मेरे दोस्तो ! हिन्दू मुसलमान नवजवानों ! आप इस समाज को जुल्म से बचाने के लिए मैदान में आयें, देहातों और शहरों जायें और पुकार लगायें कि यह जुल्म नहीं होना चाहिये। यह दंगे नहीं होने चाहिए। इसमें बेगुनाह मारे जाते हैं।

मैंने कई बार इसका नक़शा खींचा है कि एक यात्री बड़े अरमानों के साथ बम्बई से आ रहा है, थोड़ी सी पूंजी जोड़कर। सुना है कि मां बीमार है। जाते ही दवा लाऊंगा। वह मुझे देखकर खुश होगी। उसके अंदर ताकत आजायेगी और वह आंखें खोल देगी। अभी वह स्टेशन से चला ही था कि उसे छुरा घोंप दिया गया। उधर माँ तड़प रही है और इधर बेटे ने जान दे दी। जिस समाज में यह घटनायें हों उस समाज में क्या कोई भी तरक्की और खुशी की बात हो सकती है। अपने देश मे यूनीवर्सिटियों की जो संख्या बताई जाती है, मैं कहता हूं इसकी

www.abulhasanalinadwi.org

दस गुना यूनीवर्सिटियां हो जायें तब भी इस समाज के लिए कोई खुशी और इतमीनान की बात नहीं, कोई इज्जत की बात नहीं। औसत पढ़े लिखे लोग हों मगर जुल्म से नफरत हो, भ्रष्टाचार से नफरत हो तो वह समाज जीवित है ताक़तवर है और सम्भव है कि दूसरी कौमों (राष्ट्र) का नेतृत्व कर सके।

मेरे प्रिय भाइयो, सम्मानित शिक्षको और विद्वत समुदाय ! मैं क्षमा चाहता हूं—

रखियो गालिब मुझे इस तल्ख नवाई में माफ़,
आज कुछ दर्द मेरे दिल में सिवा होता है।

अगर मैं अपनी सीमा से बाहर निकल गया हूं अगर मैंने कुछ एक कटु सत्य तेज लहजे में कही हों तो मुझे क्षमा करें क्योंकि सत्य की कटुता को कोई मीठी वाणी मीठा नही बना सकती वह धोखा देना होता है। मैंने कटु सत्य को स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया है उसके लिए मैं आप से क्षमा प्रार्थी हूं। हमारी सोसाइटी का रोग यह है कि कोई साफ बात कहता नहीं। बहुत दूर से चल कर अपनी पार्टी और अपने सम्प्रदाय को बचाते हुए हजार एहतियात और बड़ी जतन के साथ एक बात ऐसी कही जाती है कि फिर कोई पकड़ न सके। उनको पकड़ जाने की चिन्ता अधिक होती है और सोसायटी के तबाह होने की चिन्ता कम होती है। लेकिन जब आग लगी हो तो यह RESERVATIONS बाकी नहीं रहते, बातचीत के आदाब बाकी नहीं रह सकते। तब, आग लग जाती है तो फिर किसी जबान में कैसे भी तरीके से कहा जाता है, बच्चा भी बोल उठता है कि आग लगी है। इस समय वस्तु स्थिति यही है न इससे कम न इससे अधिक। इस समय हमारा समाज ज्वालामुखी के दहाने पर खड़ा है और कोई उपाय इसको बचा नही सकता। अगर कोई चीज इसको बचा सकती है तो वही मजहबी इसानों, बुद्धजीवियों और निःस्वार्थ लोगों का मैदान में आना और परिस्थितियों से निवटना तथा अपना नमूना दुनिया के सामने और कम से कम हिन्दुस्तान के सामने प्रस्तुत करना।

मैं फिर कहता हूं कि इस यूनीवर्सिटी ने मोहम्मद अली और शौकत अली को पैदा किया है हसरत मोहानी और मौलाना जफ़र अली खाँ को पैदा किया है और हमें आशा है कि यह संस्था आज भी ऐसे आदमियों को पैदा कर सकती है और इसमें पैदा करने की क्षमता है। आप किसी छोटे कारनामें पर गर्व न करें। आपको पूरे हिन्दुस्तान को सामने रखना चाहिए और आपको अपनी शक्ति छोटी-छोटी समस्याओं पर नहीं खर्च करना चाहिए। आपकी ताकत बड़ी कीमती है इसका असल अधिकारी आपका समाज है आपका यह पूरा देश है। इसलिए आप अपने साथ भी ज्यादती करेंगे और देश की भी हकतल्फ़ी करेंगे और मिल्लत की भी हकतल्फ़ी होगी और आपने छोटी छोटी बातों में अपनी शक्ति खर्च कर दी। आपकी आन्तरिक क्षमताओं, आपका ऊँचा दृष्टिकोण, और जिस मिल्लत की मीरास (उत्तराधिकार) आपको मिली है, जिस आसमानी किताब के आप रखने वाले हैं उसका इन छोटी छोटी समस्याओं से कोई जोड़ नहीं। जो आयत मैंने आपको पढ़कर सुनाई है—अरे इन नस्लों में कुछ बचे खुचे इंसान तो होते, सहृदय लोग तो होते, सूझ बूझ वाले इन्सान होते, वह फ़साद से लोगों को रोकते और मना करते। अगर वह नहीं थे तो उन कौमों का तख्ता उलट दिया गया, उनकी दास्तान (गाथा) भी दास्तानों में नहीं रही। वह गलत अक्षर की तरह इतिहास के पन्नों से मेट दिये गये। और हमें डर है कि हिन्दुस्तान का यह वर्तमान समाज खुदा न करे कहीं ऐसे ही किसी नतीजा से दो चार न हो। इस लिए मैं आपसे अपील करता हूं कि आप अपनी शक्ति, अपनी बुद्धि, अपनी कार्य क्षमता और अपने गुण छोटी छोटी समस्याओं पर खर्च करने के बजाय हिन्दुस्तान को बचाने के लिए और मिल्लत को उसकी इज्ज़त का मुकाम दिलाने के लिए खर्च करें।

मैं आपके प्रति आभारी हूं कि आपने बड़े धैर्य के साथ गम्भीर होकर मेरी बात सुनी।

www.abulhasanalinadwi.org

मौलाना अबुल हसन अली नदवी का संक्षिप्त परिचय:-

महान लेखक, विचारक एवम् इतिहासकार मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी जिन्हें आमतौर से अली मियाँ के नाम से जाना जाता है, का जन्म सन् १९१४ ई० में रायबरेली नगर के पास स्थित दायरा शाह अलम उल्ला जिसे तकिया कलाँ कहते हैं, में हुआ। आपके पिता मौलाना हकीम सैयद अब्दुल हई अरबी तथा उर्दू के महान विद्वान थे और उनकी कई कृतियाँ इस्लामी साहित्य की दुनिया में अपना जोड़ नहीं रखतीं। अभी मौलाना की अवस्था नौ साल की थी कि सन् १९२३ ई० में आपके पिता का निधन हो गया आपकी शिक्षा दीक्षा आपके बड़े भाई डाक्टर हकीम सैयद अब्दुल अली और आपकी माता की संरक्षता में पहले रायबरेली फिर लखनऊ में हुई। मौलाना के गुरुजनों में कई लोग राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के महान विद्वान रहे हैं।

मौलाना नदवी ने पन्द्रह साल की अवस्था में अपनी पहली किताब लिखी जो मिस्र से प्रकाशित हुई। सन् १९३४ ई० में आपकी नियुक्ति अध्यापक पद पर दारुल उलूम नदवतुल उल्मा, लखनऊ में हुई। इस पद पर आपने लगभग दस साल तक कार्य किया। दिसम्बर १९६१ ई० से मौलाना अली मियाँ दारुल उलूम नदवतुल उल्मा, लखनऊ के रेक्टर पद पर हैं। एक उच्चकोटि के विद्वान, विचारक, लेखक और इतिहासकार होते हुए भी मौलाना नदवी अपने आपको एक विद्यार्थी बताने में गर्व का अनुभव करते हैं। अरबी और उर्दू भाषा पर आपका समान अधिकार है। मौलाना नदवी की शैली परिमार्जित, प्रभावशाली और मनमोहक है। भाषा और शैली दिल में उतर जाने वाली है। अरबी साहित्य में मध्यपूर्व एशिया के साहित्यकार, जिनकी मातृ भाषा अरबी है, मौलाना का लोहा मानते हैं। देश विदेश की पत्र-पत्रिकाओं में आपके भाषण और लेख विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

सन् १९५६ ई० में दमिश्क विश्वविद्यालय में विजिटिंग प्रोफेसर

की हैसियत से दिये गये दस लेक्चरों की आपकी व्याख्यान माला को अरबी भाषा में दमिश्क और बेरुत से बड़ी आन बान के साथ प्रकाशित किया गया। आप लगभग साठ पुस्तकों के लेखक हैं जिनमें से अधिकांश उर्दू, अरबी, अंग्रेजी, हिन्दी, तुर्की, फारसी आदि भाषाओं में अनुवादित हो चुकी हैं। आपकी पहली अरबी पुस्तक "माज़ा ख़सरुल आलम" के अब तक ग्यारह से अधिक संस्करण निकल चुके हैं।

दमिश्क के 'अकेडमी आफ लेटर्स' के सदस्य के अतिरिक्त मौलाना राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय अनेक साहित्यिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थाओं के सक्रिय और सम्मानित सदस्य हैं। आपकी अभिरुचि लिखना पढ़ना और देशाटन है। भारतीय उपमहाद्वीप के अतिरिक्त यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका महाद्वीप और मध्यपूर्व एशिया के विभिन्न देशों का आपने भ्रमण किया है।

मौलाना अली मियाँ के दिल में मानवता के प्रति बड़ा दर्द है। और देश प्रेम की तड़प है। अपने देशवासियों की सेवा से ओत-प्रोत मौलाना की दूर दृष्टि जब उस कगार तक पहुंचती है जिस पर खड़ी मानवता आत्म हत्या के लिए अथाह समुद्र में अन्तिम छलांग लगाने को तैयार खड़ी है, तो वह व्याकुल हो उठते हैं और प्रयास करते हैं कि किस प्रकार अपने कर्म और वचन से मदमस्त मानव की कमर पकड़ उसे गर्त में गिरने से बचा लें।

देश में व्याप्त भ्रष्टाचार और नैतिक पतन से आप अत्यन्त चिंतित हैं किन्तु निराश नहीं हैं। नैतिकता और आचरण के क्षेत्र में मानव का उत्थान कर देश को सुखी एवं समृद्ध देखना आपकी मनोकामना है। मौलाना चाहते हैं कि प्रत्येक भारतवासी न केवल स्वयं नेक और अच्छे काम करे और बुरे काम से बचे और रोके बल्कि संसार के लिए वह एक नमूना प्रस्तुत करे। इसी में मानवता का कल्याण है। और यही 'पयामे इन्सानियत' के मंच से देश के कोने-कोने में आपके दौरों का उद्देश्य है। जीवन के प्रत्येक क्षण का पूरा पूरा हक अदा कर देना आपका मोटो (MOTTO) है।

www.abulhasanalinadwi.org